INTERNATIONAL ADVANCE JOURNAL OF ENGINEERING, SCIENCE AND MANAGEMENT (IAJESM)
January-June 2023, Submitted in June 2023, iajesm2014@gmail.com, ISSN -2393-8048
Multidisciplinary Indexed/Peer Reviewed Journal. SJIF Impact Factor 2023 =6.753

तुलसीदास के विचार और साहित्य रचना

श्रीमती अवि सुखीजा, शोद्यार्थी, हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर (राज.)

परिचय

ईश्वर, जीव, माया, जीव आदि की मैंने आध्यात्मिक विचारधारा के अन्दर समेट लिया है और राजा प्रजा, पिता – पुत्र, भाई – बहन, गुरु – शिष्य, शत्रु – मित्र, घर– परिवार, आदि के संबंधो को लेकर गोस्वामी जी जो विचार व्यक्त किए हैं उन्हे सामाजिक विचार धारा में रखा गया है। यदि उन दोनों विचार धाराओं का सम्यक अध्ययन कर लिया जाय तो हम तुलसी की विचारधारा से संबंधित अनेक जिज्ञासाओं को शान्त कर सकते हैं।

गोस्वामी जी पर इस सम्प्रदाय का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था किन्तु इसे उन्होने थोड़ी भिन्नता के साथ स्वीकार किया है। उनके अनुसार इसमें कोई संदेह नहीं कि ब्रह्म निर्गुण है लेकिन उन्होने यह भी मान्यता स्थापित की कि निर्गुण ब्रह्म ही सगुण ब्रह्म हो जाता है–

जो गुन रहित सगुन सोइ कैसे। जल हिम उपल विलग नहिं जैसे ।।

उन्होने जीव को ब्रह्म से अलग माना है। जगत् को उन्होने असत्य नहीं, सत्य माना है। जीव और जगत ब्रह्म के स्वरुप के अंश हैं जिन पर ईश्वर या ब्रह्म का पूर्ण शासन रहता है। भक्ति या उपासना से ही जीव मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार गोस्वामी जी की वैचारिक स्थिति शंकराचार्य से एक सीमा तक सहमति का भाव प्रदर्शित करती है किन्तु असहमति भी स्पष्ट है।

गोस्वामी जी के आराध्य श्री राम है और वे पूर्ण परात्पर ब्रह्म हैं। आवश्यकतानुसार और अपनी लीला प्रदर्शित करने के लिए वे सगुण रुप में प्रकट होते है :–

परबस जीव स्वबस भगवंता। जीव अनेक एक श्रीकंता ।।
माया वस्य जीव अभिमानी ईस वस्य माया गुन खानी ।।

ईश्वर ने अवतार लिया है–

विप्र धेनु सुर संत हित, लीन्ह मनुज अवतार
निजं इच्छा निर्मित तनु, माया गुन गोपार ।।

सीता राम की ही शक्ति है। राम उस शक्ति के अधीन नही है जीव और जगत परतंत्र तो हैं किन्तु भक्ति द्वारा ईश्वर कृपा को प्राप्त कर जीव स्वतंत्रता और चौतन्यता का अनुभव कर सकता है। जीव अपने कर्मों में आवद्ध होता है। जब तक यह कर्म बंधन नहीं छूटता तब तक जीव जन्म और मरण की ग्रंथि से मुक्त नहीं होता और सदैव दुःख का भागी बना रहता है। गोस्वामी जी ने माया के अस्तित्व को स्वीकार किया है, किन्तु उन्होने माया के दो भेद भी बताए हैं : – विद्या माया और अविद्या माया। रामचरितमानस के उत्तरकाण्ड में इसकी विशद चर्चा है :–

मोह न नारि नारि कै रुपा पन्नगारि यह रीति अनूपा ।।
माया भगति सुनहु तुम्ह दोऊ नारि वर्ग जानइ सब कोऊ ।।
पुनि रघुवीरहिं भगति पियारी माया खलु नर्तकी विचारी ।।

गोस्वामी जी ब्रह्म को राम के रुप में देखते हैं इसी लिए उनका ब्रह्म सगुण और निर्गुण दोनो है :–

जाकर नाम सुनत सुभ होई। मेरे घर आवा प्रभु सोई ।।

राम सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वव्यापी और सर्वेश्वर हैं। जगत मिथ्या है किन्तु ब्रह्म का शरीर होने के कारण सत्य भी है। मंदोदरी इस रहस्य का उद्घाटन बड़ी मार्मिकता से करती है :–

विस्वरुप रघुवंसमनि, करहु वचन विस्वास।
लोक कल्पना वेद कर, अंग अंग प्रति जासु ।।

जीव ब्रह्म का अंश है किन्तु लीला के कारण ब्रह्म और जीव का भेद बना रहता है :–

ईस्वर अंस जीव अविनासी। चेतन अमल सहज सुखरासी ।।
सो मायावस भयउ गोसाई । बंध्यो कीर मरकट की नाईं ।।
भूमि गिरत भा ढाबर पानी। जनु जीवहिं माया लपटानीं ।।

हनुमान जी भी कहते है :–

तव माया वस फिरउं भुलाना। ताते मैं नहिं प्रभु पहिचाना।।

ब्रह्म और जीव में सेवक और स्वामी का भाव रहता है–

वास्तव में गोस्वामी जी का दृष्टिकोण अपने पूर्ववर्ती आचार्यों के सिद्धान्तों से मेल भी खाता है और भिन्नता भी प्रकट करता है। रामचरितमानस और विनयपत्रिका जैसे महान ग्रंथों में हमें गोस्वामी जी की विशेष विचार धारा का अनुभव प्राप्त होता है। विनायकपत्रिका की एक पंक्ति विशेष महत्वपूर्ण बन पड़ी है

कोउ कह सत्य झूठ कह कोऊ जुगल प्रबल कोऊ मानै।

तुलसि दास परिहरै तीनिभ्रम सो आपन पहिचानै।

वास्तव में गोस्वामी जी की विचारधारा एक ऐसी रंग बिरंगी माला है जो मानव कल्याण के लिए तैयार की गयी है।

जब गोस्वामी जी ब्रह्म के प्रति अपनी विचारधारा प्रकट करते हैं तब श्री राम के रूप में एक मर्यादा पुरोषोत्तम का रुप सामने रखते हैं। जगत की चर्चा करते है तो सत्यान्वेषी होकर सत्य को सामने रखते हैं। जब जीव की चर्चा करते हैं तो उसके दुःख की चर्चा करते है किन्तु चर्चा ही नहीं करते दुःख मुक्ति का उपाय भी बतलाते हैं।

वे अपने राम को सामने लाते हैं और कहते हैं कि राम की शरण में चले जाओ तुम्हारा कल्याण हो जाएगा किन्तु वे हमें सचेत भी करते हैं कि राम की शरण में जाना इतना आसान कार्य भी नहीं है जितना कि प्रायः लोग समझ बैठते है श्रीराम के मुख से ही सुनिए :–

निर्मल मन जन सो मोहि पावा मोहिं कपट छल छिद्र न भावा ।।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

गोस्वामी जी हिन्दी के मार्तण्ड हैं जिनके समक्ष अन्य कवियों की प्रतिभाएँ बौनी सी नजर आती है। उन्होने वेद, उपनिषद, रामायण, महाभारत आदि का बहुत ही गहन अध्ययन किया था। भारत हमेशा से ऋषियों महर्षियों का देश रहा है। यहाँ का एक ऐसा दर्शन रहा है जिसका लोहा आज भी सारा संसार मानता है। यहाँ विभिन्न धार्मिक मतावलंबी रहें हैं और किसी न किसी रुप में उन्होने हमारे दर्शन और संस्कृति को समृद्ध ही किया है। गोस्वामी जी के समक्ष संस्कृत का विशाल साहित्य और दर्शन तो था ही, सिद्धों और नाथों की परंपरा से वे पूर्ण परिचित थे। चूँकि वे एक समाज निर्माता थे इसलिए उन्होने परंपरा से सिर्फ उतना ही लिया जितना काम्य था।

गोस्वामी जी के ऊपर अतीत के विभिन्न कवियों एवं धार्मिक संप्रदायों का प्रभाव पड़ा था। महर्षि बाल्मीकि के रामायण से लेकर बौद्धों के दशरथ जातक, महाभारत के विशेषतः वनपर्व में रामकथा के तत्व विद्यमान है। वौद्धों के दशरथ जातक के अर्न्तगत रामकथा का वर्णन मिलता है। जैन साहित्य में पउमचरिउ, पम्परामायण, उत्तररामायण में भी रामकाव्य के दर्शन होते हैं । इसके अतिरिक्त पद्मपुराण, ब्रह्माण्डपुराण, श्रीमदभागवतपुराण, नृसिंहपुराण, विष्णु पुराण, अग्निपुराण आदि में भी रामकाव्य का उल्लेख मिलता है। इनमें काव्यात्मकता का कम, वर्णनात्मकता का ही प्राधान्य है। इनके अतिरिक्त अध्यात्म रामायण, महारामायण, आनन्द रामायण, भुशुण्डि रामायण, अद्भुत रामायण आदि में भी राम काव्य के सुन्दर एवं सजीव रूप का दर्शन होता है।

साहित्य सृजन

तुलसी का आविर्भाव उस समय होता है जब हमारे देश में मुस्लिम साम्राज्य की शोधग्रंथ स्थापना हो चुकी थी। मुगलों के शासन के साथ साथ उनकी अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दोनों हमारे देश में प्रकट हुयीं। तलवार के बल पर बाबर ने साम्राज्य की स्थापना तो कर दी किन्तु वह हिन्दुओं को भावनात्मक रुप से पराजित न कर सका हुमायूँ की स्थिति तो और भी बदतर थी। ऐसे घोर अंधकार के युग में अकेले राणा प्रताप राजपूतों के अस्तित्व और स्वाभिमान की लड़ाई लड़ रहे थे और अंत तक लड़ते रहे। भारत का लगभग शेष भू–भाग अकबर द्वारा पदाक्रान्त हो चुका था।

उद्देश्य

1. जीव ब्रह्म का एक अंश है और एक रूप भी। ब्रह्म एक है किन्तु वह नाना रूपों में दिखलाई पड़ता है जिसे हम जीव कहते हैं।
2. जगत माया और भ्रम का स्वरुप तो है किन्तु वह ब्रह्म का स्वरुप भी माना गया है।
3. ध्यान, उपासना, ज्ञान और भक्ति द्वारा जीवात्मा मुक्ति प्राप्त कर सकती है।
4. श्री हरि की लीला ही मानता है वही वास्तविक स्वरुप को पहचान सकता है।

सार

तुलसी वस्तुतः गंभीर चिंतक थे इसलिए उन्होंने अपने रामचरितमानस में साहित्य धर्म, दर्शन, राजनीति, लोकाचार, समाज व्यवस्था, न्याय, स्वभाव, गुण आदि की चर्चा की है और यहीं उनकी ऊची नीची विचार भूमियाँ है जहाँ हम उनकी अद्भुत क्षमता, कारयित्री प्रतिभा और साहित्यिक सामर्थ्य की झलक पाते हैं। यदि हम उनकी धार्मिक विचार भूमि की चर्चा करें तो वह हमें दो रुपों में दिखलाई पड़ती है साधारण धार्मिक विचार भूमि और वर्णाश्रम धार्मिक विचार भूमि। पहली भूमि तो सामान्य भूमि है जो समान रुप से मानव मात्र की है जिसके अनुसार एक सामान्य मनुष्य बातविचार करता है, व्यवहार करता है। किसी तथ्य पर अपने ढंग से विचार प्रकट करता हैं लेकिन वर्णाश्रम विचार भूमि एक असमान्य विचार भूमि हैं जहाँ तुलसी एक विशेष कवि, मार्गदर्शक और लोकसंग्रह कर्त्ता के रुप में खड़े हुए

दिखलाई पड़ते हैं और इसी भूमि पर स्थिर रहते हुए वे अपने जीवन दर्शन को व्यक्त करते हैं, अपनी समाजिक दृष्टि को रेखांकित करते हैं क्योंकि यह विचार भूमि विशेष भूमि है और यहाँ वर्णाश्रम धर्म के सारे नियम लागू होते हैं और लोगों को उन्हीं नियमों के अनुसार आचरण करना पड़ता है। इसके अन्तर्गत वर्ण और आश्रम के साथ ही और अनेक वैचारिक भूमियाँ हैं जहाँ तुलसी खड़े होकर हमारा मार्ग दर्शन कर रहें हैं. यथा स्त्री धर्म, राजधर्म, मित्रधर्म, पुत्रधर्म, भातृधर्म, सेवकधर्म इत्यादि।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

हिन्दी साहित्य का इतिहास : शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी, सम्वत् 2057, पेपर बैक, प्रथम संस्करण।

लोकवादी तुलसीदास : त्रिपाठी, डॉ0 विश्वनाथ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1974

राम कथा :फादर कामिल बुल्के, प्रयाग वि.वि. छठां संस्करण, 1999

रामश्वमेध :सम्पादक, प्रो. पाण्डेय, इन्द्रजित व मिश्र डॉ0 विधाधर, जीवन ज्योति न्यास, कलकत्ता, प्रकाशन वर्ष सम्वत् 2050

लोकालोक :डॉ0 रेड्डी, वी. गोपाल, रूपान्तरकार, प्रो0 राव, पी0 आदेश्वर, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1979